इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
Inspiring Students, Empowering Society
(संसद के अधिनियम के अधीन स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by an Act of Parliament)

Prof. Shri Prakash Mani Tripathi
Vice –Chancellor

सं. इंजवि / कु. / 2020 /
दिनांक: 05.09.2020

शिक्षक दिवस : 2020

शिक्षक दिवस की आप सभी को बधाई। भारतीय दर्शन के मर्मज्ञ, भाष्यकार एवं प्रवाहक, भारतीय दर्शन परंपरा एवं पाश्चात्य दर्शन परंपरा के बीच सेतु, पूर्व राष्ट्रपति एवं भारत रत्न डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को शत् शत् नमन। शिक्षक के रूप में हमारे दायित्व बहुआयामी हैं। भारतीय बहुभाषिकता, अंतर्विद्यावर्ती अध्ययन और भारत केंद्रित शोध की ओर ध्यान केंद्रित करना अब हमारी प्राथमिकता है।

शिक्षा आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का द्वार खोलने की एकमात्र कुंजी है। शिक्षा का एक उद्देश्य युवाओं को स्वयं को जीवनभर शिक्षित करने के लिए तैयार करना भी है। अतः शिक्षक के रूप में अब हमें सतत्–शिक्षा की उन प्रणालियों की ओर दृष्टिपात करना होगा जिनका स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने प्रावधान किया गया है। प्राइमरी पाठशाला से लेकर अनुसंधानशाला तक शिक्षक निरन्तर अपने विद्यार्थियों को कर्मपथ पर चलने और आगे बढ़ने के लिए शिक्षित और दीक्षित करता रहता है।

शिक्षक वह नहीं है जो छात्र के दिमाग को तथ्यों से बोझिल करे बल्कि शिक्षक वह है जो सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विद्यार्थी को सक्षम बनाता है और आने वाले कल की चुनौतियों के लिए उसे तैयार करता है। वह विद्यार्थियों के अंदर जीवन और विकास के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व करने की क्षमता विकसित करता है। उसे संबंधित विषय के साथ ही ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार का सम्यक बोध कराता है।

इस वर्ष का 'शिक्षक दिवस' हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 के आलोक में संपन्न करने जा रहे हैं। चौंतीस वर्षों के बाद भारतीय शिक्षा संसार को अनेक नए संदर्भों और नवाचारों से संबद्ध किया गया है। भाषा, संस्कृति, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता को केंद्र में रखकर इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की नींव रखी गई है जिसमें जड़ से जगत तथा परंपरा से आधुनिकता तक का अद्भुत समावेश किया गया है।

नई शिक्षा नीति में यह अभिव्यक्त है कि हमारा परिवेश भी हमें शिक्षित करता है और प्रकृति से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने यह कहा था कि "वृक्ष, पौधे, शुद्ध वायु, स्वच्छ तालाब आदि श्यामपट्ट, पुस्तकों एवं परीक्षाओं से कम आवश्यक नहीं हैं।" नई शिक्षा नीति शिक्षा में भारत के नैसर्गिक भंडार को समाहित करने वाली है। गांधी जी भी यह मानते थे कि "शिक्षा में कृत्रिमता नहीं आनी चाहिए। ऐसा करने से बालक और युवा के शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ तत्वों का विकास नहीं हो पाता है।" उनका यह स्पष्ट कहना था कि हमारे भोजन, औषधि और शिक्षा में प्रकृति का अनुसरण होना ही चाहिए।

नई शिक्षा नीति में ज्ञान के साथ बोध का समन्वय है। शिक्षार्थी में समझ और विवेचन की शक्ति विकसित करना इसका लक्ष्य है ताकि उसके व्यक्तित्व की पूर्णता का प्रकाशन हो सके। एक उन्नत समाज के निर्माण में शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का मूल कार्य शिक्षण को जीवन केंद्रित बनाना है, मात्र विषय केंद्रित नहीं – यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल सूत्र है। इसीलिए शिक्षक का दायित्व शिक्षार्थी के भीतर स्वचिंतन की अग्नि प्रज्ज्वलित करना है, केवल सूचनाओं से उसके मस्तिष्क को भरना नहीं। अर्थात हमें यह सिखाना चाहिए कि हमारे विद्यार्थी कैसे सोचें, न कि क्या सोचें।

नई शिक्षा नीति में बुद्धि और चरित्र दोनों को समान महत्व दिया गया है। मूल्यों के बिना शिक्षा आत्मा को सबल नहीं बना सकती। शिक्षक यह मानकर चलें कि वह केवल पढ़ाने वाला ही नहीं जगाने वाला भी है, बढ़ाने वाला भी है।

डॉ0 राधाकृष्णन के विचार एक शिक्षक के रूप में तो सदैव हम लोगों के लिए प्रेरक हैं ही, साथ ही अन्य विशिष्ट भारतीय शिक्षाविदों, जिनमें स्वामी दयानंद, पंडित मदन मोहन मालवीय, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, महात्मा गांधी और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का नाम लिया जा सकता है, द्वारा अलग–अलग शब्दों में व्यक्त यह भाव महत्वपूर्ण है कि शिक्षक के क्रिया और व्यवहार का प्रत्यक्ष प्रभाव उसके विद्यार्थियों, शिक्षणालयों और समाज पर पड़ता है। इस दृष्टि से विचार करें तो शिक्षक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का निर्माता होता है। शिक्षक के इस दायित्व को भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने व्यावहारिक रूप दिया गया है। शिक्षक दिवस पर यह हम सबका संकल्प है कि हम भारतीय ज्ञान और आधुनिक तकनीक से परिपूर्ण भारत की युवा पीढ़ी का निर्माण करेंगे। यह देश अपने आचार्यों के कारण ही विश्वगुरू रहा है। आइये, हम पुनः अपने उद्यम से विश्वगुरू के पद पर राष्ट्र को आसीन करें।

– प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति

अमरकंटक, जिला अनूपपुर, म.प्र.–484887 Amarkantak, Dist. Anuppur, M.P.-484887
Phone : 07629-269710 || Fax 07629 269712 || eMail : vc@igntu.ac.in || website : www.igntu.ac.in